आबरू के नाम पर हत्या के इलाके में आबरू के नाम पर ही बनी दंगों की जमीन

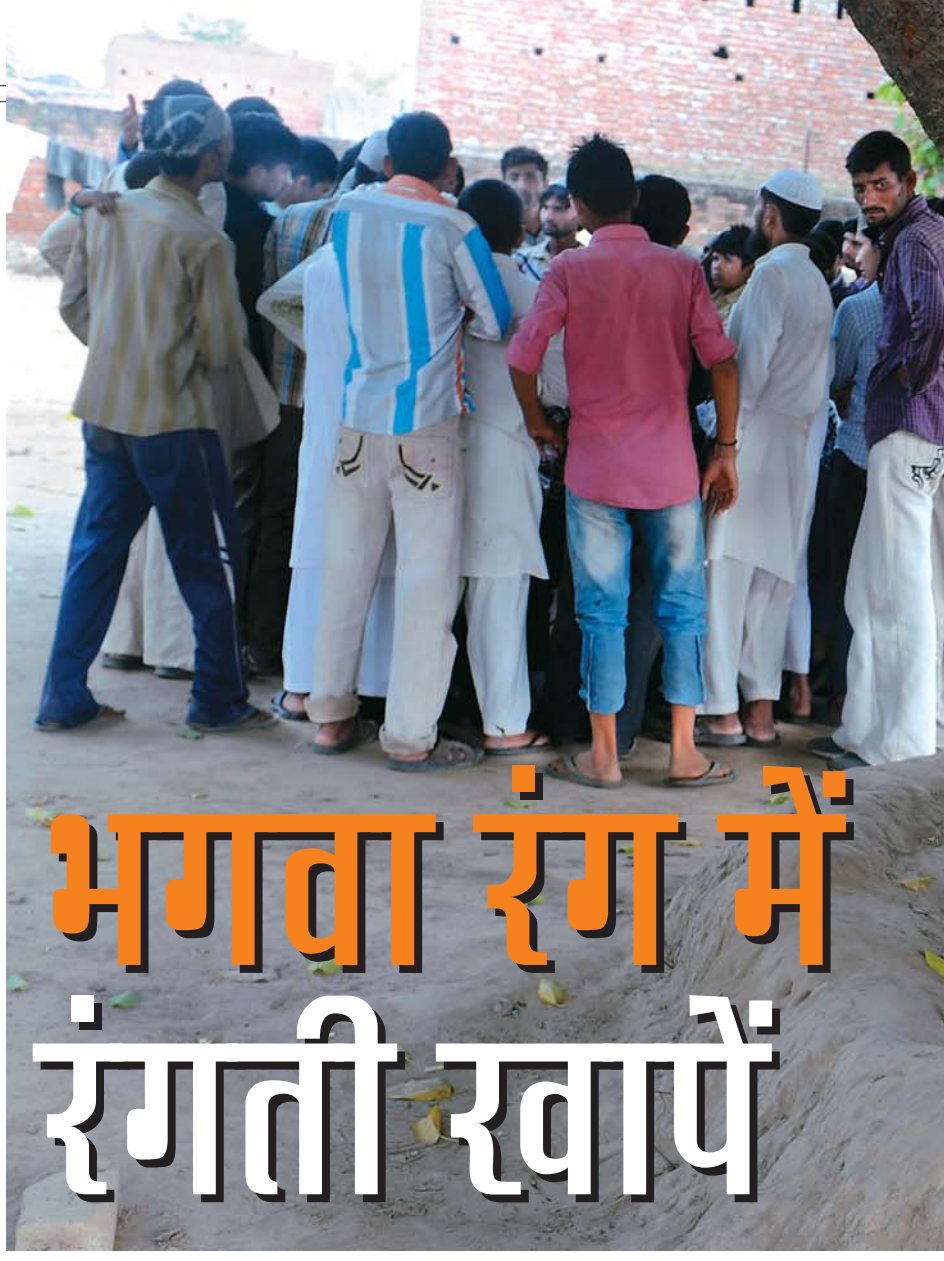

भगवा रंग में रंगती खापें

मनीषा भल्ला

एक जनवरी 1987 में शामली के गांव करमोखेड़ा में बिजली दर के खिलाफ बालियान खाप के दिवंगत नेता बाबा महेंद्र सिंह टिकैत के नेतृत्व में जाट और मुस्लिम एक साथ लड़े, जिसमें जाट नेता जयपाल सिंह और मुस्लिम नेता अकबर अली दोनों शहीद हुए।

दो मई, 1989 को मुस्लिम महिला नईमा का अपहरण हो गया पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। सभी मुसलमान महेंद्र सिंह टिकैत के पास आए। टिकैत अपने काफिले के साथ सिसौली से भोपा थाने का घेराव करने पैदल कूच कर गए, जाटों पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया और गोलियां चलाईं। हालांकि नईमा का बलात्कार कर उसकी हत्या कर दी गई थी।

छह मार्च, 1988 को रजबपुर-मुरादाबाद सड़क पर पुलिस ने कृषि मसलों पर जाट किसानों पर गोलियां बरसाईं तो मुसलमानों ने ही जाटों की मदद की।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में परंपरागत जाट-मुस्लिम एकता की ये चंद मिसालें हैं। दोनों समुदायों ने एक दूसरे की मदद के लिए गोलियां खाई थीं। मुसलमानों का सबसे करीबी संबंध जाटों से था। देश के दूसरे हिस्सों से हिंदू-मुस्लिम दंगों की आग का ताप यहां कभी नहीं पहुंचा। यहां तक कि भारत-पाकिस्तान विभाजन और बाबरी मस्जिद विवाद के वक्त भी नहीं। मुजफ्फरनगर के नामी फौजदारी वकील मोहम्मद वसीम

छाया: मनीषा

दंगों में सब कुछ लुटा चुके बेघर मुस्लिम समुदाय (ऊपर) और शाहपुर कैंप में आंसू बहाती बच्ची

कहते हैं कि मुजफ्फरनगर में एक दिन में औसतन 4-7 कत्ल होते हैं। वजह साइकिल टक्कर, घूरना, छेड़छाड़, जमीन-जायदाद कुछ भी हो सकती है। इस हिसाब से दंगों में कवाल गांव में एक जाट लड़की से छेड़छाड़ और फिर छेड़छाड़ के आरोपी शाहनवाज की हत्या, उसके बाद लड़की के भाई गौरव और मामा सचिन के कत्ल को दंगों की वजह बताना गले नहीं उतरता। आखिरकार दोनों समुदायों में जो 60 सालों में नहीं हुआ, वह 20 दिनों में कैसे हो गया? दरअसल मुजफ्फरनगर इज्जत के लिए नौजवान लड़कियों और प्रेमी जोड़ों की निर्मम हत्या के लिए चर्चा में रहा है। इस मानसिकता को खाप पंचायतों ने खाद-पानी दिया है। इसीलिए सांप्रदायीकरण में लड़की (कवाल गांव वाली घटना) के साथ छेड़छाड़ की घटना को मुद्दा बनाया गया। पिछले एकाध साल में विश्व हिंदू परिषद द्वारा कथित लव जिहाद के खिलाफ कई पोस्टर जारी किए गए। सांप्रदायिक ताकतें यह जानती हैं कि बहू-बेटी के मुद्दे पर खाप पंचायतों को उकसाया जा सकता है। गौरतलब है कि बीते 27 अगस्त को जिले के कवाल गांव में पास के मलकपुर गांव की एक जाट लड़की के साथ छेड़छाड़ की कथित बात सामने आई। मृतक गौरव के पिता का कहना है कि उनके बच्चे स्कूल से आ रहे थे। गौरव हमेशा अपनी बहनों के साथ आता था। मलकपुर आने-जाने के लिए कवाल गांव होकर ही आना पड़ता है। गौरव के परिजनों का आरोप है कि शाहनवाज ने उनकी लड़कियों के साथ छेड़छाड़ की। सचिन किसी काम से पहले से कवाल में ही था। उन्होंने लड़कियों को तो घर भेज दिया। फिर तीनों में तूतू-मैंमैं हुई। बहस झगड़े में बदल गई और सचिन तथा गौरव ने शाहनवाज की हत्या कर दी। बदले में शाहनवाज के रिश्तेदारों ने गौरव और सचिन की हत्या कर दी। लेकिन शाहनवाज के पिता का कहना है कि यह छेड़छाड़ का मामला

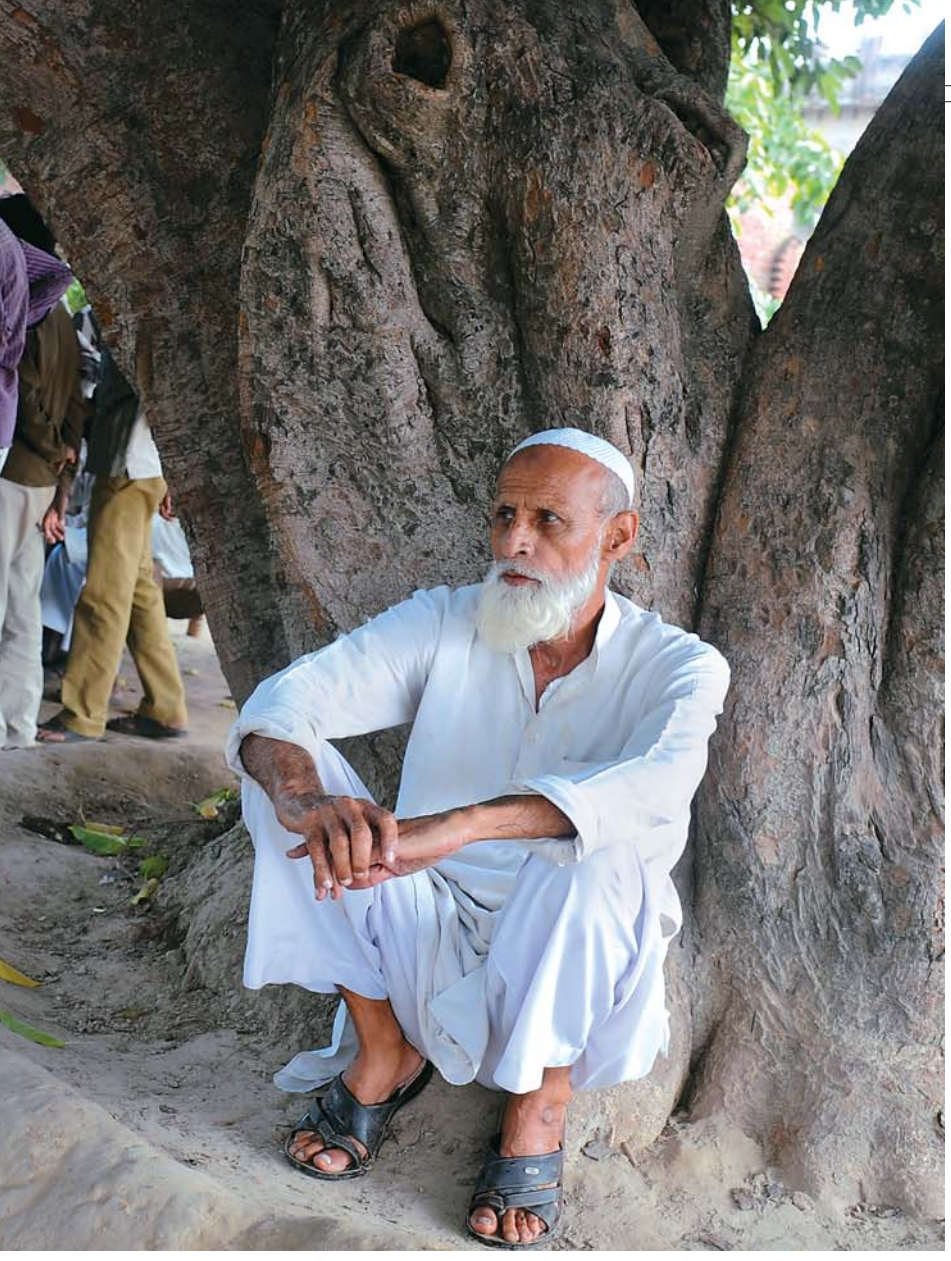

छाया: त्रिभुवन तिवारी

नहीं था। गौरव की साइकिल शाहनवाज की मोटरसाइकिल से टकरा गई थी जिसे लेकर दोनों में विवाद हुआ। अहम बात कि दोनों पक्षों की ओर से करवाई गई एफआईआर में छेड़खानी की घटना का जिक्र नहीं है। दंगों की वजहों की तह में जाएं तो कई और बातों का खुलासा होता है। देवबंद के मौलाना मसूद मदनी कहते हैं, 'दंगों के दौरान प्रशासन मूक बना रहा। जब पूरी बहुमत की सपा सरकार का राज है तो कोई तीसरी पार्टी दंगे कैसे करवा सकती है? उनका कहना है कि इसका अर्थ है कि दंगे सपा सरकार और भाजपा की मिलीभगत से हुए हैं। सपा भी दंगे चाहती थी। मुसलमान का अब सपा से मोह भंग है। कम से कम मायावती की सरकार में कभी दंगे नहीं हुए थे। वहां वन वूमन शो रहता है।' विहिप ने यहां एक नारा दिया है बेटी बचाओ, बहू लाओ। विहिप नेता ललित महेश्वरी दंगों की वजह कथित लव जिहाद को बताते हैं। पूछे जाने पर महेश्वरी लव जिहाद मामलों के आंकड़े नहीं दे पाते हैं। हालांकि यह सच है कि 2 महीने पहले लिसाड़ गांव में एक मुस्लिम लड़का और हिंदू लड़की भाग गए थे जिस वजह गांव में काफी तनाव रहा। उनके अनुसार बीते एक वर्ष से विहिप गांवों में जागरण कर रहा है। एक सवाल के जवाब में वह कहते हैं कि अमित शाह के आने से काडर में बदलाव आया है। नरेंद्र मोदी ने सुलझे हुए व्यक्ति को उत्तर प्रदेश भेजा है। इस सवाल के जवाब में कि क्या जाट आपके साथ आएगा? इसपर वह कहते हैं कि जाटों की सोच हमारी सोच से काफी मिलती है। विहिप के प्रचार का सुबूत कुटबा गांव में मिलता भी है। जाट युवा कहते हैं कि मुसलमान 60 रुपये की जींस और 45 रुपये की टीशर्ट पहन कर हमारी बहन-बेटियों पर फब्तियां कसते थे।

इलाके में छेड़छाड़ की घटनाओं से इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन यह समस्या प्रशासनिक, सामाजिक स्तर पर सुलझाई जा सकती थी। वोट के ध्रुवीकरण के लिए इस सुनियोजित दंगे में मुसलमान का

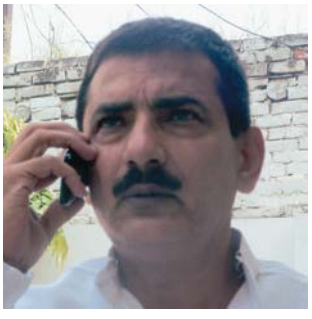

बालियान खाप समितियां बना काम कर रही है कि मुस्लिम भाई अपने घरों को लौट आएं

अशोक बालियान

यह चुनाव की तैयारी है। जाट कट्टर नहीं था। कट्टर बना दिया गया। मुसलमान का अब सपा से मोह भंग है।

मसूद मदनी

स्याह धब्बा मुजफ्फरनगर पर

खड़ी बोली, गर्म मिजाज मुजफ्फरनगर की पहचान है। तेजी से बढ़े शहरीकरण से मुजफ्फरनगर अछूता नहीं रहा। औद्योगिक बदलाव से मुसलमानों की किस्मत चमकी। कहीं कोई दिक्कत नहीं थी। अंसारी रोड पर पिछले करीब 45 वर्षों से मनसब गेस्ट हाउस चला रहे सफदर गौड़ को आज भी इस बात पर गर्व है कि वह ब्राह्मण हैं। वह कहते हैं कि हमारी पंचायतें एक हैं। सामाजिक रिश्तों तक सब ठीक है, लेकिन हिंदू-मुस्लिम शादियां मंजूर नहीं। मेरठ विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के प्रोफेसर रहे डॉ. अशोक शास्त्री के अनुसार 20-30 पीढ़ी पहले सब एक थे। वरिष्ठ वकील नरेंद्र मित्तल बताते हैं कि 1967 में चौधरी चरण सिंह के मुख्यमंत्री बनने के साथ ही पश्चिमी यूपी का राजनीतिक परिदृश्य बदला। विभाजन के समय मुसलमानों का जमींदार तबका पाकिस्तान चला गया। जो बचे उन्हें चरण सिंह ने अपने साथ आने का न्यौता दिया। उन्होंने बागपत और पुरकाजी के नवाब खानदानों को विश्वास में लेकर जाट-मुस्लिम एकता की नींव रखी। इससे धर्मनिरपेक्ष मोर्चा वजूद में आया। मुफ्ती जुल्फिकार कहते हैं कि दंगों की साजिश करने वाले जानते हैं कि इन्हें लड़ाए बिना यहां सियासी कब्जा मुश्किल है।

सुहेल वहीद

'छोड़ूंगी ना किसी को, आप सब भी मेरा साथ देना'

हमारे घर में तो जी सभी थे। सब निकल गए जी, मुझे दाब लिए...(रुलाई जो रुकती नहीं। बुखार से तपता बदन निढाल हो जाता है। वह कसकर अपने हाथों से मुझे पकड़ती है और कंधे पर मुंह दबाकर टूटती आवाज में अपनी बात कहती है),...वे चढ़ गए-कोई तबल, कोई गंडास, कोई तलवार...मैं घबरा गई...बस जी बीच में दब गई। हमारी बैठक में ही बार-बार...(रुलाई..)मुंह काला किए। उस दिन से ही बीमार हूं जी। बुखार आ रहा है।

क्या गांव के ही लोग थे? हां जी। छै थे। कुछ के तो नाम याद हैं, कुछ के ना। मेरा तो बताते हुए भी बहुत जी परेशान हुए है। ये ना पता था जी कि हमारे पड़ोसी ऐसे निकल जाएंगे। विश्वास था, ये न सोचा था ऐसा जुलम करेंगे। जितनी बार जिसका मन आया उसने जुलम ढाया, फिर छोड़ दिया।

कौन लोग थे? पहचान वाले थे? हां जी। जान-पहचान वालों ने सब गलत किया। अनजानों ने तो कुछ नहीं बिगाड़ा। उन्होंने गलत काम के बाद मेरा घर

जला दिया, राख कर दिया। मैं तो किसी तरह जान बचाकर भागी। आंखों के आगे जिंदगी जल गई।

आपके गांव में ऐसा पहली बार हुआ? हां जी, पहली बार। दो और औरत मेरे को मिली गांव की जिनके साथ ये हुआ। ऐसा पहले कभी न हुआ। सब अच्छा चल रहा था। मेरे ऊपर चढ़ाई करने वाले तो सब पड़ोस के थे। कई तो छोटे थे मेरे से। बोले जा रहे थे-जाने नहीं देना है। नास करना है...तेरा तो नास करना है, निकल न पाएगी। मुसलमान तो आज एक भी नहीं छोड़ना है, सारे... हैं...।

आपने सोचा ये क्यों हुआ..? कवाल में जो हुआ, उसके बाद से लोग कह रहे हैं गड़बड़ हुआ। इत्ते घर-औरतें तबाह कर क्या मिला उन्हें?

आपके आदमी क्या कहते हैं...? वे कहे हैं, सरकार से इंसाफ मिलेगा। चुप न रहूंगी। मैं सबको पहचानती हूं जी, छोड़ूंगी ना...आप सब भी मेरा साथ देना।

ये आपबीती है फुगाना की सामूहिक बलात्कार पीड़िता की। उनके साथ दो और औरतों ने एफआईआर कराई है। ऐसी अनगिनत वारदातें हुई हैं। इनमें बड़ी संख्या में लिसाढ़ की औरतों के साथ बदसलूकी हुई। लड़कियां सामने आई हैं, लेकिन अभी उन्हें जान का डर है। बड़े पैमाने पर लड़कियां और महिलाएं गायब हैं, जिनके बारे में आशंका जताई जा रही है कि उन्हें बलात्कार के बाद मार दिया गया है।

भाषा सिंह

काफी नुकसान हुआ है। जमीयते उलमा-ए-हिंद की सूची के अनुसार दंगों में मरने वाले 47 लोगों में 44 मुस्लिम हैं। पचास हजार से ज्यादा मुसलमान राहत शिविरों में रह रहे हैं। शाहपुर के मदरसा इस्लामिया में चलाए जा रहे राहत शिविर में कुल 900 मुसलमान हैं। इसे जमीयते-उलमा-ए हिंद की ओर से चलाया जा रहा है। काकड़ा गांव से आए महबूब कहते हैं कि 7 तारीख को घर के बाहर तलवारें और गंडासे चल रहे थे। हमारी मस्जिद तोड़ दी और पाक कलाम जला दिया। जाटों के साथ गांव के दलित समुदाय के लोग भी थे। कांकड़ा से आई आमना कहती है कि हम कभी गांव नहीं जाएंगे। मौत के साए में आखिर कौन रहना चाहेगा? फरजाना का कहना है कि उनके घर आकर दंगाइयों ने कहा कि मर्दों को काटेंगे और लुगाइयों को तो वैसे ही निपटा देंगे। उनके हाथों में पेट्रोल की बोतलें थी। शहनाज कहती है कि अगर गांव का प्रधान चाहता तो ऐसा नहीं होता। हनीफा के घर के दो सदस्य अभी भी लापता हैं। अफसाना की बेटी की शादी थी। घर में जेवर और नकदी रखे थे लेकिन उसका परिवार किसी तरह अपनी जान बचाकर भागा है।

रोजाना घटनाएं हो रही थी। हमारी और प्रशासन की कोशिशों से देवबंद में दंगे नहीं हुए।

बाविया अली

कुटबा गांव के हाजी अब्दुल अजीज बोल भी नहीं पा रहे हैं। धीमे से बताते हैं कि उनकी आंखों के सामने दंगाइयों ने उनके जवान बेटे के तलवार से तीन टुकड़े कर डाले। वह उसका कफन-मिट्टी भी नहीं कर सके क्योंकि सभी को अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा। कैंप में गर्भवती आमना का नौवां महीना चल रहा है। वह कहती है कि इतनी तकलीफ है कि वह उठ बैठ भी नहीं पा रही है। लोनी कैंप में लाक गांव की रेहाना बताती है कि उसके दादा ससुर और चाचा ससुर की उनके सामने हत्या कर दी गई। शामली के लिसाड़ गांव में सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। यहां मुसलमानों के जले और टूटे घरों से सामान लूट लिया गया है। खुले संदूकों से बिखरा सामान लूट की गवाही दे रहा है। घरों की छतें तोड़ दी गई हैं। यहां मुसलमानों के 90 घर फूंके गए हैं। लिसाड़, लांक, बावड़ी, कुटबी, काकड़ा, फुगाना गांवों में मुसलमानों का सबसे ज्यादा नुकसान हुआ है। कैंपों के अलावा मुस्लिम समुदाय के लोगों ने बेघर हुए हजारों मुसलमानों को अपने घरों में भी पनाह दे रखी है। लोनी, कांधला, कैराणा, शाहपुर, जौला कैंपों में रहने वाले हर मुसलमान की कहानी दयनीय है। शाहपुर के पास एक मात्र कमालपुर कैंप भी मिला जिसमें हिंदू रह रहे हैं। लगभग सभी दलित समुदाय के हैं। इनके पास राहत सामग्री के नाम पर कुछ भी नहीं है। इन गांवों और कैंपों में आपबीती सुनने के बाद लगता है कि इस नुकसान की भरपाई जल्दी नहीं हो सकेगी। बेशक अब बालियान खाप के चौधरी नरेश टिकैत जगह-जगह समितियां बना अमन कायम करने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन इस दंगे ने यह साबित कर दिया है कि जातीय खाप पंचायतों (जाट और मुस्लिम दोनों पंचायतें) पर अब सांप्रदायिक ताकतें हावी हो रही हैं। इसकी राजनीतिक वजहें जो भी हों लेकिन खाप

लव जेहाद की घटनाएं बढ़ रही हैं। जागरुकता के लिए हम गांव-गांव में कैप कर रहे हैं

ललित माहेश्वरी

और जाति पंचायतों की भूमिका नकारात्मक रही है। इस मामले में गठवाला खाप और मुस्लिम पंचायत दोनों को क्लीन चिट नहीं दी जा सकती। सरकार तो जिम्मेदार है ही। मसूद मदनी कहते हैं, '12 दिन तक जाट ने इंतजार किया, प्रशासन से उसे इंसाफ नहीं मिला तो वह ठगा महसूस कर रहा था। उधर मुस्लिम नेतृत्व ने मुसलमानों को उकसाया। छह तारीख को खालापार में मुस्लिम पंचायत में 2,000 लोग थे तो अगले दिन नांगला-मंदौड़ पंचायत में 50,000 जाट इकट्ठा हो गए।' मुस्लिम पंचायत में कादिर राणा और मौलाना जमील ने भड़काऊ भाषण दिए। इसमें सपा नेता राशिद सिद्दकी भी थे। उधर जाट पंचायत में साध्वी प्राची और भाजपा नेता हुकुम सिंह ने लोगों को भड़काया। अशोक बालियान कहते हैं,'तवा किसी का, आग किसी की और तीसरे ने फायदा उठाते हुए अपनी रोटियां सेंक ली। जाट को मोहरा बना खुद पीछे हो गए।' उनका इशारा भाजपा की ओर है।

काफी खंगालने पर पता लगा कि दंगों की जमीन एक साल से तैयार की जा रही थी। छोटी-छोटी घटनाएं रोज हो रही थीं। देवबंद निगम बोर्ड के चेयरमैन बाविया अली कहते हैं, 'हमने देवबंद में होने वाली धर्म संसद रुकवाई है। अगर समाजवादी पार्टी की सरकार ताकत से मुजफ्फरनगर में मुस्लिम और जाट पंचायतें भी रोकती तो नुकसान न होता।' भारतीय किसान यूनियन के प्रवक्ता धर्मेंद्र मलिक बताते हैं कि कवाल कांड के बाद न सरकार ने कार्रवाई की और न पंचायतें रोकी। जाट समुदाय चाहता था कि कवाल में मारे गए गौरव-सचिन के परिवार का नाम एफआईआर से निकाला जाए, दोषी गिरफ्तार हों, छेड़छाड़ की घटनाएं रुकें। प्रशासन ने हमारी 20 दिन में सुनी, पहले सुनवाई होती तो यह सब न होता।' मलिक के अनुसार मुख्य

देवबंद में होने वाली हिंदू संसद, जो मौलवियों दबाव में स्थगित की गई

अधिकारियों के तबादले, फर्जी वीडियो, 5 सितंबर को गांव लिसाड़ में पंचायत, छह तारीख को खालापार में धारा 144 लागू होने के बावजूद मुस्लिम पंचायत जिसमें एसएसपी और डीएम का पहुंचना, अगले दिन नांगला-मंदौड़ में खाप महापंचायत आदि ने आग में घी का काम किया। मलिक के अनुसार सात तारीख वाली पंचायत में जाते वक्त बस्सी गांव में मुसलमानों ने जाटों पर पथराव किया। इसमें गठवाला खाप के लोग लहूलुहान हुए। वे अस्पताल जाने की बजाय महापंचायत में पहुंचे तो उन्हें लहूलुहान देख लोगों में आक्रोश फैला। प्रशासन को चाहिए था कि वह जख्मी किसानों को पंचायत जाने देने की बजाय अस्पताल पहुंचाता। पंचायत में खाप के नेताओं के पहुंचने से पहले भाजपा और विहिप ने मंच कब्जा रखा था। जाट नेताओं का तर्क है कि उन्हें भाषण नहीं देने दिया गया। पंचायत से वापसी में जौला, संबल-हेड़ा, शेरनगर गांवों में जाट-मुस्लिम समुदायों में झड़पें हुईं। उन्होंने अपने गांवों में फोन किया कि मुसलमानों ने उनपर हमला कर दिया है। इसके बाद गांवों में हालात बेकाबू हो गए। मुस्लिम फंड ट्रस्ट देवबंद के मैनेजर हसीब सिद्दकी के अनुसार 'हमें फिजां में नफरत का अंदाजा था, पिछले चार महीनों से देवबंद के जिम्मेदार लोग सरकार के वरिष्ठ मंत्रियों से मिलने की कोशिश कर हालात बताने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन मुलाकात का समय नहीं मिला।' □

GNA CAD/CAM Courses & Training
make you ready for the industrial world

Awarded as "The Best Authorised Training Centre of 2012 & Winner of National Level best performing ATC Award 2013" In India by PTC University, USA presented by John Straurt, *SVP Global Education Programm PTC-USA.*

advantage GNA CAD/CAM

- Backup of GNA DURAPARTS LTD.
- ISO 9001:2008 Certified
- PTC University, USA Certified programs
- HANDS ON TRAINING in reputed companies
- INDUSTRY ENDORSED curriculum
- Proficient & experienced INSTRUCTORS
- OUTSTANDING PLACEMENT record (Globally)
- Latest versions of CAD/CAM SOFTWARES: Creo 2.0 (Pro/E); CATIA; Siemens NX; Solid Edge (ST); AutoCAD
- Assistance in PLACEMENT
- Engineering Services OUTSOURCING
- Further study options in CANADA

CALL: 01824 - 500214
9815115000, 9876882099

Promoted by: GNA GEARS, GNA DURAPARTS LTD.
Certified by: TÜVRheinland Precisely Right., PTC university USA
Software Support: PTC, CATIA, SIEMENS PLM Software, Solid Edge, Autodesk
Hardware Support: hp invent, lenovo, IBM, DELL

Other Courses Offered
MBA
M.Sc. IT
BBA / BCA
B.Com (Professional)
Hotel Management
Animation & Multimedia

GNA Institute of Management & Technology
G.T. Road, Mehtan, Phagwara -144401, Punjab. Tel: 01824-500211 – 212
E-mail: admissions@gnaedu.in www.gnaedu.in

GreenBlueStudio • GNA-IMT 19/09-13